बन्धुजन व विशिष्ट अतिथिगण
नमस्कार ।

बड़े ही संयोग की बात है कि आईआईएमटी विश्वविद्यालय का यह प्रथम दीक्षांत समारोह है और मेरा भी पहला दीक्षांत संबोधन। किसी भी विश्वविद्यालय के लिए दीक्षांत समारोह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण उत्सव होता है। विश्वविद्यालय के आचार्यगण, कर्मचारी वर्ग और विशेषकर शिक्षा समाप्त कर बाहर जाते हुए विद्यार्थियों के लिए इसका आयोजन बड़ा ही महत्व रखता है।

दीक्षांत का तात्पर्य शिक्षा पूर्ण करने से है। शिक्षा पूर्ण करने का अपना अलग महत्व है। वैसे तो शिक्षा जीवन भर कभी पूर्ण नहीं होती परन्तु यहाँ शिक्षा का समापन हम उस औपचारिक शिक्षा जो विद्यालय या विश्व विद्यालय में दी जाती है या एक किताबी शिक्षा को लेते हैं। इस शिक्षा के बाद जो शिक्षा हमें बाहर की दुनिया से मिलती है वो कुछ अलग प्रकार की होती है। वह व्यावहारिक व अनुभव के आधार पर हम प्राप्त करते हैं।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम।

हमारे शास्त्रों में ऐसी मान्यता है कि विद्या सर्वोपरि है और इसके समान कोई पूंजी नहीं होती। शिक्षा उज्जवल भविष्य की राह और सभी का मौलिक एवं मानव अधिकार है।

किताबी और स्कूली या कहिए विश्व विद्यालय स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करना अपने आप में बहुत महत्व रखता है परन्तु यह शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए यह उससे अधिक महत्वपूर्ण है। इसी पर हमारा व्यक्तित्व निर्भर करता है। अतः आज यह बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण हो गया है कि विश्व विद्यालय स्तर तक हमें कैसी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। मेरा मानना है जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व चरित्र का निर्माण कर सके और जो देश के भविष्य निर्माण में सहायक सिद्ध हो, वह ही एक अच्छी शिक्षा हो सकती है । यह तभी सम्भव है जब हम अपने विद्यार्थियों को विज्ञान व तकनीक की शिक्षा

के साथ-साथ मुल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा प्रदान करें। हमारी यह शिक्षा हमारे संस्कारों और सभ्यता से पृथक नहीं होनी चाहिए और उसमे अध्यात्मिकता का समावेश होना भी अत्यावश्यक है।

प्राचीन काल से ही भारत एक अध्यात्मिक राष्ट्र रहा है । यहाँ हर किसी को धर्म से ऊपर उठ कर एक मानवता/इंसानियत का जीवन जीने की पूर्ण स्वतंत्रता रही है। केवल यह कह देना कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, भारत की व्यापक अध्यात्मिक दरोहर को संकीर्ण मात्र करना है। अतः हमारी कोई भी शिक्षा अध्यात्मिकता से हट कर नहीं हो सकती।

राष्ट्र निर्माण के लिए सर्वप्रथम चरित्र निर्माण और फिर नागरिकता और समाज कल्याण की आवश्यकता होती है। यह तभी सम्भव है जब हम अपनी युवा पीढ़ी को मानवीय मूल्यों व नैतिकता पर आधारित शिक्षा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के परिपेक्ष्य में दें।

इस प्रकार की शिक्षा इस बात पर निर्भर है कि हमारे शिक्षक कैसे हैं। किसी ने सही ही कहा है कि :

“A good teacher cares about the performance of the students in class room; A great teacher cares more about the performance of the students in life”.

अतः यह परम आवश्यक हो जाता है कि हम ऐसे निष्ठावान शिक्षकों को ढूंढें और उनको प्रोत्साहित करें जिससे हमारी अगली पीढ़ी का पूर्ण सर्वांगीण विकास हो सके और उनकी प्रतिभा निखर कर सामने आए। इसी लिए कहते हैं :

“It is important to invest in education but the investment should be more in teacher education and development”.

हमारे आज जो विद्यार्थी यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके जीवन का अनुभव लेने निकल रहे हैं उन सब का दायित्व बनता है कि वह उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए एक विस्तृत आद्यात्मिक भारत की संरचना पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने career का प्रारम्भ करें।

संचार माध्यम के चलते आज भारत का हर नागरिक अपने अधिकारों के प्रति बड़ा ही सजग और जागरूक हो गया है। यह बहुत ही अच्छी और हर्ष की बात है,परन्तु इन अधिकारों की अपेक्षा रखते हुए हम अपने कर्तव्यों को भूल जाते हैं। एक नागरिक अपने अधिकारों की तो बात करता है पर उन अधिकारों को पाने के लिए उसे किन कर्तव्यों की निर्वाहन करना चाहिए उसकी और उसका ध्यान नहीं जाता। कर्तव्य पालन के बाद ही अधिकारों की बात होनी चाहिए। भारतीय सभ्यता या धर्म के अनुसार प्रभु श्री ने पहली बार मानव रूप में मर्यादा पुर्षोत्तम राम के रूप में अवतार लिया, जिन्होंने हमें कर्तव्य पालन सिखाया, चाहे वह पिता का कर्तव्य हो, माता का, भाई का, मित्र का या शत्रु का। तत्पश्चात द्वापर में श्री कृष्ण जी के रूप में भगवान हमें बताते हैं कि कर्तव्य पालन के पश्चात भी अगर आप के साथ नाइंसाफी होती है तब आप को चुप रह कर अत्याचार सहन नहीं करना चाहिए वरन अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए । यही धर्म है। हमारे संविधान में भी Fundamental Rights के साथ-साथ कुछ Fundamental Duties भी बताई गई हैं। परन्तु विडम्बना यह है कि हम इन Fundamental Duties की उपेक्षा कर केवल अधिकारों की ही बात करते हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन ऍफ़ कैनेडी का कहना था "Ask not what your country can do for you – ask what you can do for your country" उनकी यह बात इंगित करती है कि अगर हर नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करेगा तो उसके अधिकार सुरक्षित रहेंगे।

मैं इस दीक्षांत समारोह के माध्यम से नवयुवकों का आहवान करता हूँ कि वह एक अच्छे नागरिक बनें और अपने कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाह करते हुए ही अपने अधिकारों की मांग करें । इसी में सबकी भलाई व राष्ट्र का विकास निहित है।

आज आप सभी अपनी शिक्षा पूर्ण कर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिए निकल रहे हैं । केवल शैक्षणिक योग्यता के आधार पर अच्छा कार्य करना सम्भव नहीं है, जब तक कि आप अपनी पूर्ण निष्ठा व लगन से उसे करने की ठान नहीं लेते । इस सम्बन्ध में मेरा केवल इतना ही सुझाव है "Do what you love and love what you do”.

इसको ध्यान में रखते हुए यदि आप कार्य करेंगे तो आप को सफलता अवश्य ही मिलेगी।

विश्व विद्यालय की छात्राओं के लिए मैं कहना चाहूंगा कि विश्व विद्यालय द्वारा प्रदान की जा रही सभी डिग्रीओं के ऊपर एक डिग्री 'होम मेकिंग' की है, जो आप सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है । यह आप के ऐटिटूड और अनुभव पर निर्भर करती है। होम मेकिंग में आप अगर कुशल हैं तो आप निश्चित रूप से भारत भाग्य विधाता हैं क्योंकि आपकी इस डिग्री व शिक्षा पर ही अगली पीढ़ी का विकास निर्भर करता है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम अपने सम्बोधन में बार - बार दोहराते थे, जिसे कि मैं उद्धरित करना चाहूंगा -

“Where there is righteousness in heart,
there is beauty in the character,
where there is beauty in the character,
there is harmony in the home,
where there is harmony in the home,
there is order in the nation; and
where there is order in the nation,
there is peace in the world”

अंत में मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि आप की शिक्षा ज्ञान व विद्या का सही उपयोग तभी है जब आप इसे केवल अपने उत्थान में न लगाकर दूसरों की सेवा व देश हित में समर्पित करें।

आप सभी इस विश्व विद्यालय में अपनी शिक्षा समाप्त कर यहाँ से विदा ले रहे हैं परन्तु मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि आप यहाँ कहीं भी रहेंगे यहाँ बिताए हुए दिन आप कभी नहीं भूलेंगे। आप इस विश्व विद्यालय के अम्बेस्डर के रूप में जा रहे हैं और यहाँ की हर अच्छी बात को जग में फैलाना आपका दायित्व बनता है। मुझे विश्वास है कि आप अपना यह दायित्व निश्चित ही निभाएंगे व शिक्षा जगत में अपने विश्व विद्यालय की पताका मजबूती से फहराएँगे।

आपका यह विश्व विद्यालय मेरठ की शिक्षा संस्थाओं में एक अग्रणी संस्था के रूप में उभरा है जिसके कारण मेरठ शहर एक बड़ा शिक्षा का केंद्र बन सका।

यह बहुत ही गर्व की बात है कि वर्ष 1995 में कॉलेजों के एक समूह से प्रारम्भ करते हुए, IIMT ने शैक्षणिक सीमाओं का विस्तार करते हुए सन 2016 से IIMT विश्वविद्यालय के रूप में अपनी एक पहचान बनाई है। यह काफी संतोष का विषय है कि विश्वविद्यालय तेजी से प्रगति की और अग्रसर है और इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हो रही है। आज यह कुछ गिने चुने राज्य निजी विश्वविद्यालयों में एक पहचान बना चुका है। विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रम भारत के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमो से मेल खाते हैं। इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य एक ऐसे मानव संसाधन को विकसित करने पर है जो व्यक्तिगत करियर के विकास के अलावा देश के समग्र विकास के लिए काम कर सकता है। विश्वविद्यालय का अन्य शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग जगत और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग है, जो इस विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को अतिरिक्त लाभ देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि

विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण होने वाले छात्र किसी दूसरे शैक्षणिक संस्थान के छात्रों से पीछे नहीं हैं और उनमें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने और नेतृत्व करने के सभी गुण विध्यमान हैं। मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कह सकता हूं कि आईआईएमटी विश्वविद्यालय अपने सिद्धांत "विद्या दधाति पात्रता" को चरितार्थ करने के लिए ईमानदारी से काम कर रहा है। मैं विश्वविद्यालय के पदाधिकारिओं, प्रशासनिक एवं शैक्षणिक सदस्यों और छात्रों को विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे शिक्षा के आंदोलन का हिस्सा बनने के लिए अंतरमन से बधाई देता हूं। मैं आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

मुझे इस दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित करने के लिए आईआईएमटी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री योगेश मोहन जी गुप्ता को मेरा सादर धन्यवाद। मैं इस दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनकर प्रसन्न हूँ और विनम्र महसूस कर रहा हूं। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एचएस सिंह और कार्यकारी परिषद के सभी सदस्यों का आभारी हूं। आप सभी को आपके भविष्य के प्रयासों और आपकी शैक्षणिक गतिविधियों के लिए शुभकामनाएं।

कल्याणभस्तु
जय हिन्द
जय भारती ।।

(आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ में दिनांक ३०.१०.२०२१ को आयोजित दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि श्री पंकज मित्थल, मुख्य न्यायमूर्ति, जम्मू एंड काश्मीर एंड लद्दाख का उद्बोधन)